ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 183-184**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित भगत प्रथा के कारण और आयोजन प्रक्रिया : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कृष्ण वीर सिंह, 2. प्रो0 पूनम सक्सेना

शोध अध्येता, बरेली कॉलेज, (महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड वि० वि०) बरेली 2. शोध निर्देशिका व विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, फरीदपुर– बरेली (उ0प्र0) भारत

Received-14.02.2026, Revised-21.02.2026, Accepted-28.02.2026 **E-mail: krishnavir121@gmail.com**

सारांशः ***भगत प्रथा से हमारा तात्पर्य एक ऐसी प्रथा से है, जिसमें ग्रामीणजनों का ऐसा विश्वास है, कि जब परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब होता है, जो सामान्य इलाज से ठीक नहीं होता है, पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा के लिए या फिर पुत्र जन्म या पुत्र की शादी के उपरान्त परिवार का मुखिया गाँव में एक या एक से अधिक व्यक्ति जिन्हें (भगतजी) कहा जाता है से सम्पर्क कर अपनी पारिवारिक समस्याओं के बारे में बताता है, और उपाय जानना चाहता है तब भगत जी समस्या को समझकर उसे समाधान के रूप में भगत करने की सलाह देते हैं और विशेषकर माघ एवं आषाढ़ मास में भगत अनुष्ठान के आयोजन की योजना परिवार के सदस्यों द्वारा बनायी जाती है।***

तदुपरान्त निश्चित तिथि पर एक संगीत मंडली वाद्य यंत्रों के साथ उस परिवार में आती है, जिसमें 5 से 7 सदस्य तक होते हैं। मंडली के पुरुष स्त्री वेश रखकर नृत्य एवं जिस लोकदेवी–देवता को प्रसन्न करने के लिए भगत अनुष्ठान का आयोजन किया गया है, उसका यशगान करते हैं, और विशेष व्यक्ति भगत जी लोक देवी देवता के आने की प्रतीक्षा करते हैं जब विशिष्ट व्यक्ति भगतजी पर अदृश्य शक्ति का आगमन होता है तो वह झूमने लगता है और उस पर अलौकिक शक्ति का प्रभाव दिखाई देने लगता है। उसी समय वहाँ पर उपस्थित महिलाएँ, पुरुष अपनी समस्याओं के बारे में पूछते हैं और तब अलौकिक शक्ति के प्रभाव से भगतजी समस्या का समाधान सुझाते हैं, तत्पश्चात् भगतजी पर अलौकिक शक्ति का प्रभाव समाप्त हो जाता है, और वह सामान्य नागरिकों के जैसे हो जाते हैं।

कुंजीभूत शब्द– भगत अनुष्ठान, भगत प्रथा, यशगान, लोक देवी देवता, अलौकिक शक्ति, भगत मंडली, भगतजी, भूत–प्रेत, वैश्वीकरण।

प्रस्तावना– भारत एक ऐसा देश जहाँ की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। भारतीय ग्रामीण समाज अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि कार्य और पशुपालन पर आधारित रहा है। धर्म और भारतीय ग्रामीण समाज का अत्यंत घनिष्ठ संबंध रहा है। आज सम्पूर्ण भारतीय समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित है, इससे भारतीय गाँव भी अछूते नहीं है, लेकिन यह भी सत्य है कि आज 21वीं सदी में वैश्वीकरण और वैश्विक गाँव जैसी अवधारणाओं के प्रभाव होने के बावजूद भी बहुतायत में आज भी भारतीय ग्रामीणजन प्रत्येक कार्य के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने या फिर असफल होने में धार्मिक दृष्टिकोण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और हर कार्य की सफलता एवं असफलता के लिए भाग्यवादी दृष्टिकोण और ईश्वरीय कृपा के होने को निर्धारित कारक के रूप में स्वीकार करते हैं। जहाँ एक ओर भारतीय समाज में ज्ञान–विज्ञान, चिकित्सा, कृषि आदि के क्षेत्र में महान वैज्ञानिक उन्नति हुई है और बेहतर स्वास्थ्य के लिए अनेक स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ देश में उपलब्ध हैं वहीं दूसरी ओर भारतीय ग्रामीण समाज में आज भी असाध्य रोगों के इलाज के लिए और अपने परिवार की सुख शांति, पशुओं को रोगों से बचाने के लिए, गृह क्लेश और अनेक व्याधियों को दूर करने के लिए ग्रामीणजन अनेक विशेष प्रथाओं और परंपराओं को न केवल स्वीकार करते हैं, बल्कि उनके माध्यम से अपने जीवन की अनेक समस्याओं को दूर करने के लिए इन प्रथाओं को अपने जीवन में विशेष महत्व प्रदान करते हैं। निःसन्देह कहा जा सकता है कि आज के भारतीय गाँव आधुनिकता और परंपरा के संक्रमण काल से प्रभावित हैं। जहाँ एक ओर भारतीय ग्रामीण समाज में इंटरनेट, मोबाइल फोन, यातायात के तीव्र साधनों आदि का महत्वपूर्ण स्थान है, वहीं यह भी सत्य है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 78 वर्ष बाद भी सदियों से चली आ रही अनेक प्रथाओं ने भारतीय ग्रामीण समाज में अभी भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया हुआ है।

प्रस्तुत शोध में भारतीय ग्रामीण समाज में पायी जाने वाली एक ऐसी ही धार्मिक प्रथा का वैज्ञानिक अध्ययन का प्रयास किया गया है,जिसे उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ और आसपास के क्षेत्रों में भगत प्रथा के नाम से जाना जाता है। आनुभविक अध्ययन के आधार पर यह पाया गया है कि जनपद बदायूँ के ग्रामीण समाज में अधिकांश गाँवों में एकाधिक व्यक्ति विशेष जिनके विषय में ग्रामीणजनों में यह मान्यता और विश्वास रहता है कि उन व्यक्तियों पर कुछ समय के लिए अलौकिक शक्ति का वास होता है, जिसका वह उपासक होता है, इस विशेष व्यक्ति को भगत कहा जाता है, और यदि भगतजी सम्बन्धित व्यक्ति के घर पर भगत प्रथा अनुष्ठान आयोजन के समय उपस्थित हों और यदि उनसे अपनी पारिवारिक समस्याओं को बताया जाए और समाधान की प्रार्थना की जाए तो उस व्यक्ति विशेष पर आने वाले देवी–देवता समस्याओं का हल बताते हैं और ग्रामीणजन अपने जीवन की अनेक समस्याओं से दूर हो जाते है। यह आयोजन भगत प्रथा के रूप में प्रचलित है।

साहित्य पुनरावलोकन– डा0 सुरेश चन्द्र त्रिपाठी 1977 ने अपनी पुस्तक "कनौजी लोक साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब में लिखा कि "किसी विघ्न बाधा या संकट की परिस्थिति को दूर करने के लिए जिस प्रकार "स्वस्त्ययन" का अनुष्ठान होता है उसी प्रकार ग्रामीण समाज में किसी की आँख, कान की पीडा, ज्वर अथवा भूत–प्रेत, बला आदि से मुक्त करने के लिए किसी विशेष देवी देवता या आत्मा को सिद्ध किए हुए (भगत नामक व्यक्ति विशेष पर) मंजीरा आदि वाद्यों की गमक और खनक के बीच सहसा देवता का आगमन होता है।[1]

शिवा निर्मोही 1988– डुग्गर की संस्कृति चौकी प्रायः मास में प्रन्दह दिन में सप्ताह या सप्ताह में दो दिन भी ली जा सकती है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि किसी देवी देवता की छाया किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर गई है। लोक देवी देवताओं से जुड़े व्यक्तियों में एक कन्नियाँ भी होता है। कन्नियाँ किसी देवी देवता का पुजारी होता है।[2]

गोविन्द चातक 1990– भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भः मध्य हिमालय जागर शुद्ध संस्कृत शब्द है। कालिदास के रघुवंश (रात्रिनागर हो दिवाशयः 9/34) और महाभारत के जागर पर्व प्रसंग में इसका उल्लेख आया है। रात्रि में जागरण कर अथवा किसी माध्यम के ऊपर दैवी शक्ति को जाग्रत करने के लिए गाये जाने वाले गीत सामान्यतः जागर कहलाते हैं।[3]

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

डॉ0 चमन लाल वर्मा 1997– मांड्यली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन भक्ति के प्रभाव से देवता की सम्पूर्ण शक्ति उसके विशेष प्रतिनिधिक "गूर" में आ जाती है। वाद्यों की लय के साथ झूमता तथा नृत्य करता "गूर" किसी भी प्रकार की भविष्यवाणी कर सकता है। देवता के आगमन से लोग अपनी–अपनी समस्याओं को देवता से कहते है। देवता उनका समाधान करता है।"[4]

शोध अभिकल्प एवं पद्धतिशास्त्र– प्रस्तुत शोध में अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। बदायूँ जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों को चयनित करने में उद्देश्यात्मक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है व ग्रामीण क्षेत्रों में इकाईयों का चयन करने के लिए हिमगेंद प्रतिचयन विधि (Snowball sampling) को उपयोग में लाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद (बदायूँ) के ग्रामीण क्षेत्रों पर केन्द्रित है। 2011 की जनगणना के अनुसार बदायूँ की जनसंख्या 31,29,000 है जिसमें पुरुषों की संख्या 16,71,000 एवं महिलाओं की संख्या 14,58000 है। जनसंख्या का घनत्व 2011 के अनुसार 712 व्यक्ति वर्ग किमी. है। साक्षरता दर 51.29 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 68.98 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 40.09 प्रतिशत है जोकि निम्न है। जनपद बदायूँ में लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 871 है।बदायूँ जिला अपने आप में भौगोलिक दृष्टि से एक वृहद जनपद के रूप में जाना जाता है, बदायूँ में कुल 5 तहसील एवं 18 विकासखण्ड हैं।

शोध प्रविधि– चूँकि यह प्रथा जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है इसलिए स्नोबॉल निदर्शन के आधार पर गाँवों में जाकर व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर शोध कार्य को आगे बढ़ाया गया है एवं अनुसंधानकर्ता द्वारा तथ्य संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची को प्रयोग में लाया गया है शोधार्थी द्वारा परिवार के मुखिया से सम्पर्क स्थापित कर उनसे इस प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र की गयी है उत्तरदाता पुरुष एवं महिला मुखिया दोनों हैं।

तथ्य संकलन– प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए मुख्य रूप से सर्वेक्षण पद्धति, स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची, वैयक्तिक साक्षात्कार तथा आवश्यकतानुसार अर्द्धसहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है तथा आवश्यकतानुसार द्वितीयक तथ्यों को प्रयोग में लाया गया है ।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तावित शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित भगत प्रथा के आयोजन के कारणों को ज्ञात करना तथा प्रक्रिया को जानने से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद बदायूं के ग्रामीण क्षेत्र के कुल 265 उत्तरदाताओं पुरुष एवं महिला मुखिया पर आधारित है इन्हीं से विभिन्न प्रश्नों के आधार पर तथ्यों को प्राप्त कर भगत प्रथा के कारण और आयोजन प्रक्रिया को वैज्ञानिकता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है तथा प्रथम प्रश्न के आधार पर पाया गया कि चयनित उत्तरदाताओं में समस्त उत्तरदाता भगत अनुष्ठान खुशी के अवसर पर करते हैं खुशी के प्रकार के जवाब में पुत्र जन्म एवं पुत्र की शादी के उपरांत शत प्रतिशत उत्तरदाता भगत का आयोजन करते हैं। दुख के प्रकार के उत्तर में परिवार में बीमारी तथा किसी सदस्य को प्रेत आत्मा द्वारा सताए जाने के कारण क्रमशः 25.46 व 74.54 प्रतिशत उत्तरदाता भगत करते हैं।

भगत अनुष्ठान आयोजन की सलाह संबंधी प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाताओं ने माना कि स्वयं की इच्छा से करने वाले 20.3 प्रतिशत पारिवारिक दबाव के माध्यम से 23.5 प्रतिशत और भगत जी की सलाह से 56.2 प्रतिशत लोग भगत अनुष्ठान करते हैं। भगत अनुष्ठान की समय अवधि के संबंध में 81.3 प्रतिशत उत्तरदाता एक दिन एक रात अनुष्ठान करते हैं जबकि 18.7 प्रतिशत उत्तरदाता केवल एक रात अनुष्ठान करते हैं। माघ मास में आयोजन करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 45.6 है आषाढ मास में 40.4 प्रतिशत वैशाख मास में 10.8 प्रतिशत और 3.2 प्रतिशत उत्तरदाता ज्येष्ठ मास में आयोजन करते हैं। भगत आयोजन संपन्न किसके द्वारा होता है इस प्रश्न के जवाब में भगत मंडली द्वारा 100 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं भगत अनुष्ठान में मुख्य भूमिका संबंधित प्रश्न के उत्तर में भगत जी की भूमिका 39.4 प्रतिशत मंडली की भूमिका 46.2 प्रतिशत और परिवार की 14.4 प्रतिशत होती है अनुष्ठान आयोजन पर लगभग कितने रुपए खर्च होते हैं इसके जवाब में 20000 से 30000 वाले उत्तरदाता 60 प्रतिशत रहे 10000 से 20000 वाले 18.7 प्रतिशत 10000 से कम खर्च होने वाले 14.2 प्रतिशत तीस हजार से अधिक खर्च होने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 7.1 रहा।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की सर्वाधिक उत्तरदाता खुशी के अवसर उपरांत इनमें मुख्य हैं पुत्र जन्म एवं पुत्र की शादी जो कि समाज में व्याप्त पुत्र अनिवार्यता को दर्शाता है परिवार के किसी सदस्य को प्रेत आत्मा द्वारा सताए जाने के कारण समाधान के रूप में अधिक लोग भगत करते हैं सर्वाधिक उत्तरदाता भगत जी की सलाह से अनुष्ठान करते हैं साथ ही सर्वाधिक माघ मास में तथा उससे कम आषाढ़ मास में भगत का आयोजन होता है। सभी उत्तरदाताओं ने माना की भगत अनुष्ठान के लिए भगत मंडली होना आवश्यक है अनुष्ठान में मुख्य भूमिका भगत जी की होती है, इस अनुष्ठान में खर्च होने वाली धनराशि 20000 से लेकर 30000 के उत्तरदाता सर्वाधिक रहे तथा सबसे कम उत्तरदाता 30000 से अधिक खर्च करने वाले हैं।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में भगत अनुष्ठान एक आवश्यक आयोजन है जिसके लिए आयोजन करने वाले लोग खर्च की परवाह किए बिना अनुष्ठान करते हैं ताकि परिवार पर लोक देवी देवताओं कृपा दृष्टि बनी रहे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रपाठी सुरेश चन्द्र; कनौजी लोक साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब; रूपायन प्रकाशन, 1977, पृ0।
2. नर्मोही शिवा; डुग्गर की संस्कृति; नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1988, पृ.78.
3. चातक गोविन्द; भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भः मध्यहिमालय; तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली,1990, पृ. 245.
4. वर्मा चमन लाल; मांड्यली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन; निर्मला पब्लिकेशन, दिल्ली, 1994, पृ. 74.

*****